2

वर्ण-विचार
(Phonology)

निम्नलिखित शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा समझिए–

अनार ➤ अ + न् + आ + र् + अ
कबूतर ➤ क् + अ + ब् + ऊ + त् + अ + र् + अ
लोटा ➤ ल् + ओ + ट् + आ
मैदान ➤ म् + ऐ + द् + आ + न् + अ

अतएव,

वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके खंड नहीं किए जा सकते, **वर्ण** या **अक्षर** कहलाती है; जैसे— अ, उ, क्, घ्, ट्, य्, ल् आदि।

बच्चो! भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण होती है। हिंदी के वर्ण देवनागरी लिपि में लिखे जाते हैं।

वर्णमाला (Alphabet)

वर्णों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

प्रत्येक भाषा की अपनी वर्णमाला होती है। हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं जो इस इस प्रकार हैं :

स्वर — अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ — 11

अयोगवाह — अं अः — 2

व्यंजन —

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त्	थ्	द्	ध्	न्
प्	फ्	ब्	भ्	म्
य्	र्	ल्	व्	
श्	ष्	स्	ह्	

पंचम वर्ण

33

संयुक्त व्यंजन — क्ष् त्र् ज्ञ् श्र् — 4

अतिरिक्त वर्ण — ड़् ढ़् — 2

एक नज़र में

स्वर	+	अयोगवाह	+	व्यंजन	+	संयुक्त व्यंजन	+	अतिरिक्त वर्ण	➤	कुल योग
11		2		33		4		2	➤	52

वर्ण के भेद (Kinds of Letters)

उच्चारण और प्रयोग के आधार पर हिंदी वर्णमाला के वर्णों के दो भेद होते हैं :

1. स्वर
2. व्यंजन

1. स्वर (Vowels)

जिन वर्णों का उच्चारण अन्य ध्वनियों की सहायता के बिना किया जाता है, उन्हें स्वर कहते हैं। इनके उच्चारण में वायु बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर निकलती है। हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर होते हैं जो इस प्रकार हैं :

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वरों के भेद (Kinds of Vowels) : उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वर के तीन भेद हैं :

क. ह्रस्व स्वर (Short Vowels) : जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में चार होते हैं।

ख. दीर्घ स्वर (Long Vowels) : जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से लगभग दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में सात होते हैं।

ग. प्लुत स्वर (Longer Vowels) : जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं; जैसे— ओऽम्

ह्रस्व स्वर
अ, इ, उ, ऋ

दीर्घ स्वर
आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

प्लुत स्वर
ऽ

विशेष : हिंदी में प्लुत स्वर का प्रयोग अब बिलकुल बंद हो गया है। इसका प्रयोग अब केवल संस्कृत भाषा में होता है।

स्वरों की मात्राएँ (Signs of Vowels)

जब स्वरों का प्रयोग व्यंजनों के साथ मिलाकर किया जाता है, तब उनका स्वरूप बदल जाता है। उनके मूल स्वरूप के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। यही चिह्न मात्रा कहलाते हैं। 'अ' को छोड़कर सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं जो इस प्रकार हैं :

स्वर	मात्राएँ	मात्रायुक्त व्यंजन	शब्द
अ	–	ख् + अ = ख	खल, खत
आ	ा	क् + ा = का	काला, काजल
इ	ि	च् + ि = चि	चिड़िया, चिवड़ा
ई	ी	ज् + ी = जी	जीरा, जीभ
उ	ु	ग् + ु = गु	गुरु, गुड़
ऊ	ू	ध् + ू = धू	धूप, धूम
ऋ	ृ	म् + ृ = मृ	मृग, मृणाल
ए	े	ठ् + े = ठे	ठेला, ठठेरा
ऐ	ै	ब् + ै = बै	बैल, बैग
ओ	ो	स् + ो = सो	सोहन, रसोई
औ	ौ	ल् + ौ = लौ	लौकी, लौटा

याद रखिए

- 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती।
- जब किसी व्यंजन में 'अ' की ध्वनि नहीं मिली होती, तब उस व्यंजन के नीचे एक तिरछी छोटी रेखा लगा देते हैं जिसे हल् या हलंत (्) कहते हैं; जैसे—क्, च्, झ्, ठ्, त्, थ् आदि।
- जब व्यंजन में 'अ' की ध्वनि मिली होती है, तब उस व्यंजन के नीचे हलंत नहीं लगता। उस व्यंजन को इस प्रकार लिखते हैं; जैसे—क, च, झ, ठ, त, थ आदि।
- 'र' में 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ उसके नीचे न लगाकर 'र' के मध्य (पेट) भाग में लगाई जाती हैं; जैसे—
- र् + उ = रु ➤ रुकना, रुपया, रुचि र् + ऊ = रू ➤ रूस, रूप, रूठना

अयोगवाह (Improper Consonants)

हिंदी वर्णमाला में 'अं' और 'अः' दो वर्ण और होते हैं जिन्हें अयोगवाह कहते हैं। स्वतंत्र रूप से प्रयोग न होने के कारण इनकी गणना न तो स्वरों में और न ही व्यंजनों में होती है। अयोगवाह का प्रयोग निम्नांकित रूपों में किया जाता है :

1. अनुस्वार (Nasal Sound ं) : जब किसी वर्ण का उच्चारण करते समय वायु केवल नाक से बाहर आती है, तब उसे दिखाने के लिए शिरोरेखा के ऊपर बिंदु (ं) का चिह्न लगाया जाता है। इसे ही अनुस्वार कहते हैं; जैसे—कंधा, कंघा, बंदर आदि।

2. अनुनासिक (Semi-Nasal Sound ँ) : जब किसी वर्ण का उच्चारण करते समय वायु नाक और मुख दोनों से बाहर निकलती है, तब उस वर्ण के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगाया जाता है। इसे ही अनुनासिक कहते हैं; जैसे—माँग, चाँद, महँगा, हँसी आदि।

3. विसर्ग (Colon :) : इस ध्वनि का उच्चारण 'ह्' के समान होता है। यह स्वर नहीं है, लेकिन इसे 'अ' के साथ जोड़कर 'अः' की तरह लिखा जाता है। इसका प्रयोग प्रायः शब्द के अंत में या बीच में किया जाता है; जैसे—अतः, प्रातः, स्वतः, प्रायः, दुःख, निःसंदेह, शनैः आदि।

2. व्यंजन (Consonants)

जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इनके उच्चारण में वायु थोड़ा रुककर मुख से बाहर निकलती है। हिंदी में व्यंजनों की संख्या (क् से ह्) 33 है। संयुक्त व्यंजनों को मिलाकर इनकी संख्या 37 है।

व्यंजन के भेद (Kinds of Consonants) : उच्चारण की दृष्टि से व्यंजन के निम्नांकित तीन भेद हैं:

क. स्पर्श व्यंजन (Mutes) : जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुख के अलग-अलग भागों (कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत, ओंठ) को स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इन व्यंजनों की कुल संख्या 25 है। इन्हें पाँच वर्गों में बाँटा गया है। प्रत्येक वर्ग का नाम अपने वर्ग के पहले वर्ण के आधार पर रखा गया है; जैसे—

वर्ग		व्यंजन					उच्चारण-स्थान
कवर्ग	→	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ
चवर्ग	→	च	छ	ज	झ	ञ	तालु
टवर्ग	→	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा
तवर्ग	→	त	थ	द	ध	न	दंत
पवर्ग	→	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ

याद रखिए

- प्रत्येक वर्ग के अंतिम वर्ण को 'पंचम वर्ण' कहते हैं।

ख. अंतःस्थ व्यंजन (Semi-vowels) : जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु मुख के किसी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती, उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। अंतःस्थ व्यंजन चार होते हैं: य, र, ल, व।

ग. ऊष्म व्यंजन (Sibilants) : ऊष्म का अर्थ है—गरम। जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु मुख के विभिन्न भागों से टकराकर ऊष्मा (गरमी) पैदा करती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ऊष्म व्यंजन चार होते हैं: श, ष, स, ह।

✦ संयुक्त व्यंजन (Compound Consonants)

एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन **संयुक्त व्यंजन** कहलाते हैं।

संयुक्त व्यंजन मुख्य रूप से चार होते हैं :

क् + ष = क्ष	त् + र = त्र	ज् + ञ = ज्ञ	श् + र = श्र
कक्षा, रक्षा	मात्रा, त्रिनेत्र	ज्ञान, अज्ञात	श्रम, श्रमिक

✦ द्वित्व व्यंजन (Dubious Consonants)

जब एक व्यंजन अपने ही जैसे दूसरे व्यंजन से मिलता है, तो उसे **द्वित्व व्यंजन** कहते हैं।

जैसे— न् + न = न्न ➤ अन्न, भिन्न   द् + द = द्द ➤ भद्दा, गद्दा

✦ अतिरिक्त व्यंजन (Aspirated Consonants)

हिंदी वर्णमाला में 'ड़' और 'ढ़' दो अतिरिक्त व्यंजन हैं। इनके उच्चारण में वायु जीभ से टकराकर वापस आती है और फिर बाहर निकलती है। इसीलिए इन्हें अतिरिक्त व्यंजन कहते हैं। इन व्यंजनों से कोई शब्द आरंभ नहीं होता; जैसे—

ड़ ➤ ताड़, साड़ी, रगड़, पहाड़ आदि।   ढ़ ➤ गढ़, पढ़, कढ़ाई, सीढ़ी आदि।

✦ संयुक्ताक्षर

जब स्वर रहित व्यंजन का अपने से अलग स्वर सहित व्यंजन से मेल होता है, तब वह **संयुक्ताक्षर** कहलाता है।

जैसे— द् + य् + अ = द्य ➤ विद्या   क् + त् + अ = क्त ➤ रक्त

'र' का संयोग

'र' के संयोग में सबसे अधिक गलती होने की संभावना रहती है। अतः इस पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत होती है। 'र' के संयोग के चार नियम हैं :

1. जब 'र' स्वर रहित होता है, तब यह अपने से आगे वाले वर्ण के ऊपर लगाया जाता है; जैसे—
   र् + य = र्य ➤ सूर्य   र् + द = र्द ➤ मर्द   र् + म = र्म ➤ धर्म
2. 'र' से पूर्व कोई भी स्वर रहित व्यंजन होने पर 'र' को उसके पैरों में लगाया जाता है; जैसे—
   त् + र = त्र ➤ पत्र, छत्र   क् + र = क्र ➤ चक्र, वक्र
3. 'ट्' तथा 'ड्' के साथ 'र' का संयोग होने पर 'र' उनके नीचे दो तिरछी रेखाओं के रूप में प्रयोग होता है; जैसे—
   ट् + र = ट्र ➤ ट्रक, ट्रेन   ड् + र = ड्र ➤ ड्रम, ड्रामा
4. 'श्' के साथ 'र' जुड़ने पर 'श्र' और 'स' के साथ 'र' का संयोग होने पर 'स्र' बन जाता है; जैसे—
   श् + र = श्र ➤ श्रम, श्रेष्ठ   स् + र = स्र ➤ स्रोत, सहस्र

वर्ण-विच्छेद (Disjoin)

शब्दों में प्रयुक्त वर्णों (स्वर तथा व्यंजन) को अलग-अलग करके लिखना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है।

इन उदाहरणों को देखिए :

काजल — क् + आ + ज् + अ + ल् + अ   दिनकर — द् + इ + न् + अ + क् + अ + र् + अ

कुसुम — क् + उ + स् + उ + म् + अ   कृपा — क् + ऋ + प् + आ

आओ दोहराएँ

- वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।
- वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।
- हिंदी वर्णमाला में वर्णों के दो भेद हैं: स्वर, व्यंजन।
- एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं।
- जब एक व्यंजन अपने ही जैसे दूसरे व्यंजन से मिलता है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं।

अब बताइए

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न** (MULTIPLE CHOICE QUESTIONS)

1. दिए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने (✓) चिह्न लगाइए :

क. भाषा की सबसे छोटी इकाई क्या कहलाती है?

(a) स्वर ☐ (b) व्यंजन ☐ (c) वर्ण ☐ (d) अयोगवाह ☐

ख. वर्णों के समूह को क्या कहते हैं?

(a) वर्णमाला ☐ (b) स्वर ☐ (c) व्यंजन ☐ (d) द्वित्व व्यंजन ☐

ग. जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें क्या कहते हैं?

(a) दीर्घ स्वर ☐ (b) प्लुत स्वर ☐ (c) व्यंजन ☐ (d) ह्रस्व स्वर ☐

घ. एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन कहलाते हैं:

(a) अंतःस्थ व्यंजन ☐ (b) अतिरिक्त व्यंजन ☐ (c) द्वित्व व्यंजन ☐ (d) संयुक्त व्यंजन ☐

2. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

क. वर्णमाला किसे कहते हैं? हिंदी वर्णमाला को विस्तृत रूप में लिखिए।

ख. स्वर से आप क्या समझते हैं? इनके कितने भेद हैं? नाम भी लिखिए।

ग. अयोगवाह किसे कहते हैं? प्रत्येक को सोदाहरण लिखिए।

घ. स्पर्श व्यंजन और अंतःस्थ व्यंजन को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

3. खाली स्थानों में उपयुक्त शब्द छाँटकर लिखिए:

क. ह्रस्व स्वर _____ होते हैं। चार/सात

ख. _____ स्वर की कोई मात्रा नहीं होती। अं/अ

ग. _____ का प्रयोग पंचम वर्ण के स्थान पर किया जाता है। अनुस्वार/अनुनासिक

घ. व्यंजनों के अंत में एक खड़ी रेखा प्रयोग की जाती है, जिसे _____ कहते हैं। पाई/हलंत

5. दिए संयुक्त व्यंजनों से बने दो-दो शब्द लिखिए:

द्व	_____	_____	ह्म	_____	_____
ष्ट	_____	_____	द्ध	_____	_____
श्व	_____	_____	न्ह	_____	_____

6. दिए द्वित्व व्यंजनों से बने दो-दो शब्द लिखिए:

ल् + ल	_____	_____	त् + त	_____	_____
ट् + ट	_____	_____	च् + च	_____	_____
क् + क	_____	_____	म् + म	_____	_____

रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment)

❖ आपकी पाठ्य पुस्तक में 'र' के कई रूपों का प्रयोग किया गया है। इन सभी रूपों के शब्द बनाइए। कक्षा में सहपाठियों के बीच इनके अलग-अलग रूपों की चर्चा कीजिए।